ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

भारतीय सहित्व में वेदान्त का महत्व

Importance of Vedanta in Indian Cooperation

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

राजीव कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
एस0एस0डी0सी0
घाटमपुर, उ०प्र०, भारत

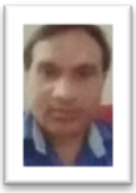

मनोज कुमार
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
एस0एस0डी0सी0
घाटमपुर, उ०प्र०, भारत

जय किशोर
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा विभाग,
एस0एस0डी0सी0
घाटमपुर, उ०प्र०, भारत

सारांश

देखा जाये तो दर्शन शब्द व्यापक है लेकिन वेदान्त शब्द उससे भी अधिक व्यापक है मूलभूत वे सारी समस्याऐं जो वेदो में वर्णित है तथा उन वेदो के अनुसार जो उसका निष्कर्ष अर्थात उसका सार जो उसका पूर्ण निष्कर्ष निकलता है जो वेदो में लिखा है तथा उसका सारा निचोड अर्थ उसका निष्कर्ष है वेदान्त कहलता है।

If seen, the word Darshan is broad but the word Vedanta is more comprehensive than all the basic problems which are mentioned in the Vedas and according to the Vedas that its conclusion i.e. its essence which comes to its complete conclusion which is written in Vedo and all its contents The meaning is its conclusion is called Vedanta.

मुख्य शब्द : भारतीय सहित्व, वेदान्त, वेदान्त दर्शन।
Indian Association, Vedanta, Vedanta Philosophy.

प्रस्तावना

वेदान्त का अर्थ

वेदान्त दर्शन का अर्थ है वेदो का अन्त या सिद्वान्त तात्यर्प यह है वह शास्त्र जिसके लिये उपनिषद्र है प्रमाण है वेदान्त में जितनी बातो का उल्लेख है उन सब का मूल उपनिषद् है। इस लिये दर्शन शास्त्र के वे ही सिद्वान्त मानवीय है जिसके साधक उपनिषद के वाक्य है।

'वेदान्त दर्शन'

उपनिषद साहित्व का अन्तिम भाग है इसके लिये इसको वेदान्त कहते है कर्मकांड और उपासना को मुख्यतः वर्णन मंत्र और ब्राहम्णो में ही ज्ञान का विवेचन उपनिषदो में वेदान्त दर्शन का शब्दिक अर्थ है वेदो का अन्त अर्थात जो वेद ग्रन्थो और वैदिक साहित्य का सार समझे जाते है उपनिषद् वैदिक साहित्व का अन्तिम सत्य है।

वेदान्त का इतिहास''

सारण्य दर्शन, योग दर्शन, प्राण दर्शन, मीमांसा दर्शन व वेदान्त दर्शन, वेदान्त सार वेदान्त (वेद का अन्त, उपनिषद् आत्मा की ब्रज वर्णन, ऐसा शास्त्र जिसमें उपनिषद प्रभाव वेदो का सार/रहस्य सिद्वान्त ग्रन्थ) इसे वेदान्त सार पर वेदान्त दर्शन–इसे सदानन्द योगीन्द्र ने लिखा है।

वेदान्त दर्शन के छः भाग है व प्रमांण दिये गये है।

1. प्रमाण– प्रत्यक्ष अनुमान, उदमान, आगम, अर्थापन्ति व
2. भ्रीष्ठप्रकिया– त–मांत्राए– पंचमहाभूत– सूक्ष्यशरीर,
3. जरामुस,– मनुष्य
   अष्टुस– पक्षीवर्ग
   स्वेदश– जूकीट
   उदभिस– वृक्षलताएं

व्यावहारिक रूप से वेदान्त ही हिन्दुओ का धर्मग्रन्थ है जितने भी अस्तिक दर्शन है सभी इसी का अपना आधार मानते है श्रुटि का आर्थ है जो सुना हुआ है यदि श्रुटि के अन्तर्गत समस्त वैदिक साहित्व कहा जाता है।

उपनिषदो की संख्या–108 मानी जाती है।

वेदान्त दर्शन की अनेक संख्याएं, हुई है इसके विचारो की अन्तिम अभिक्ति व्यास के दाशर्निक सूत्रो से हुई है उत्तर मीमांसा हिन्दू धर्म शास्त्र का सबसे प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थ है।

वेदान्त का साहित्व

साहित्व अध्ययन का तात्पर्य यह है कि यदा कदा वेदान्त शब्द उपनिषद् का वाचक बनता है दृष्टिगोचर होता है दीप पाणिनी द्वारा अराष्द्रध्यायी

में उल्लेख किया गया है कि भिक्षु सूत्र ही वस्तुतः ब्रम्ह सूत्र है सन्यासी भिक्षु कहलाते है। वेदो के सर्वमान्य सर्व क्षेष्ठ सिद्वान्त ही वेदान्त का प्रतिपाद्य है।

वेदान्त दर्शन का इतिहास में महत्व

सम्यता के प्रारम्भ में ही दर्शन विद्वान लोगो के बीच विशेष अभिरूचि का विषय था भारत में वेदो व उपनिषेद के समय से ही दार्शनिक जिज्ञासा व दार्शनिक चिन्तन का ज्ञान पिपासु श्रृदाशील विद्वानो व वुद्ध जीवियो के बीच प्रचलित प्रतिपिष्ट रहे साहित्व का प्राय सबसे प्राचीन उदाहरण है ऋएवेद की रचनाकाल प्रांय 3000 से 1300 ई0 पूर्व के बीच माना जाता है भारत में घटित वाद के दर्शनो के विकास पर उपनिषदो का व्यापक और गम्भीर प्रभाव पडा।

ध्यान देने योग्य है कि दर्शन के इतिहास में उनकी परिभाषा स्वरूप व उसकी प्रमुख समस्याओ की अवधारणा में परिवर्तन होते रहते है प्राचीन काल के दार्शनिक चिन्तन के दो प्रमुख में– एक भारत में तथा दूसरा.....

प्राचीनो के अनुसार दर्शन तत्व ज्ञान और (आत्मज्ञान.....वेषण, दर्शन की दूसरी प्रमुख सास्वा ज्ञान मीमांसा है जो ज्ञान जब स्व साधनो पर विचार कर ले जो भारत वर्ष में सबसे अधिक विश्रायन्याय दर्शन में हुआ है। उपनिषदो में वेदो का अन्त अर्थात वेदो के विचारो का परिपक्क रूप माना जाता है कि वेद वेदान्त आदि सभी शास्त्रो का अध्ययन कर लेने पर भी बिना उपनिषदो की शिक्षा प्राप्त किये हुये मनुष्य का ज्ञान पूर्ण नही होता।–

वेदान्त का साहित्य

विद्वानों ने उपनिषद शब्द की उत्पत्ति उप+नि+षद के रूप में मानी है। इसका अर्थ है जो कि ज्ञान व्यवधान रहित होकर निकट आये। जो ज्ञान विशिष्ट तथा सम्पूर्ण हो तथा ज्ञान सच्चा हो वही निश्चित ही उपनिषद कहलाता है। वेदान्त की तीन शाखायें हैं। अद्वैत वेदान्त, विशिष्ट वेदान्त तथा द्वैत वेदान्त आदि । शंकराचार्य व रामानुज तथा महवाचार्य जिनकों कमषः तीनों शाखाओं का प्रवर्तक माना जाता है।

(1) अद्वैत वाद

इसमें ब्रम्हा का विवेचन निर्गुण रूप में किया गया है तथा द्वैतवाद में ब्रम्ह को शगुण ईश्वर के रूप में विवृत किया गया है। रामानुज व महवाचार्य इस शाखा के प्रमुख दार्शनिक हैं।

शंकराचार्य संस्कृत के प्रखण्ड पण्डित थे उनका मत अद्वैत वाद के नाम से विख्यात हैं। उपनिषद के बहुत निकट माने जाते हैं। अर्थात् उपनिषद ब्रम्ह सूत्र तथा गीता पर लिखे गये भाष्यों के माध्यम से शंकर ने अपने मत का प्रतिपादन व समर्थन किया।

(2) विशिष्ट द्वैतवाद

रामानुज ने जिस मत की स्थापना की वह विषिष्ट द्वैतवाद था। उनके अनुसार इसकी प्राप्ति के तीन साधन हैं प्रत्यक्ष अनुमान व शब्द। अन्य कारणों को उन्होंने इन्ही तीनों के अन्तर्गत समाविष्ट कर लिया है।

वेदान्त अतिरिक्त सभी दर्शन व साधन आत्म अनुभव को प्रायः जटिल व उपलब्ध होने योग्य परोक्ष वस्तु मानते हैं। इसलिए प्रश्नकर्ता सही दर्षन के अभाव में अज्ञान में रहकर प्रष्न करता है।

''वचन तू ज्ञापकं न तू कारकं'' अर्थात् इन वेदान्त वचनों का ठीक से अवलोकन करेगें तो पूर्ण लाभ ले पायेंगें।

वेदान्त के उद्देश्य .

1. प्रथम उद्देश्य का तात्पर्य यह है कि वेद ही सत्य है बाकी असत्य अर्थात हमे अपने वास्तविक संसार की ओर आना अर्थात प्रकृति की ओर लौटना
2. हमे अपने वेदों से ये ज्ञान प्राप्त होता है कि हमे तृष्णा नही करना चाहिए बल्कि लौकिक व अलौकिक की ओर लौटना
3. वेदों के अनुसार जीवन का प्रयोजन धर्मएअर्थएकामएक्रोध मोक्ष को प्राप्त होना होता है इसके लिए मनुष्य में अधर्म एअनर्थ व कामवासनाओं से दूर रहकर ईश्वर भक्ति में लीन होना चाहिए

निष्कर्ष

अर्थात है इस निष्कर्ष पर पहुॅचाते है कि ब्रम्ह में प्रधान मानक जीव व जगत को उससे अभिन्न मानते है उसके अनुसार तत्व की उत्पत्ति व विनाश से रहित होना चाहिये जीव भी जैसा दिखाई देता है वैसा तत्वतः नही है परन्तु बौद्धो की तरह वेदान्त में जीव को जगत का अंग होने के कारण मिथ्या नही माना जाता मिथात्व का अनुभव करने वाला जीव परम सत्य है अर्थात उपनिषदो में नीति कहकर इसी अज्ञात वस्य का प्रतिवादन किया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *उपनिषद् भगवागीता, गौड पादकारिका ब्रम्हसूत्र*
2. *उपनिषदीता और ब्रम्हसूत्र पर सांप्रदायिक भाष्यः*
3. *राधा कृष्णान् इडियन फिलासफी भाग 1–2*
4. *दास गुप्त हिस्ट्री ऑफ इडियन फिलासफी भाग–1*
5. *पारस नाथ राय।*
6. *धर्म शास्त्र का इतिहास डॉ पाण्डुरंड वामन काण*
7. *भारतीय मिथक कोश .डॉ राजवली पाण्डेय।*
8. *मथुरा की मूर्ति कला.रू नील कण्ड जोशी।*